चाणक्य की विचारधारा

प्रिलिम्स के लिये:

चाणक्य, चंद्रगुप्त मौर्य

मेन्स के लिये:

राज्य से संबंधित कौटिल्य का सप्तांग सिद्धांत, चाणक्य की विचारधारा, समकालीन समय में चाणक्य की शिक्षाओं की प्रासंगिकता

चाणक्य की चिंतन विचारधारा यथार्थवाद और व्यावहारिकता की भावना का प्रतीक है। यह लोगों को जीवन एवं समाज की सच्चाइयों को स्वीकार करने एवं समझने के लिये प्रोत्साहित करती है ताकि उन्हें नियंत्रित किया जा सके तथा सफलता के नए स्तर तक पहुँचा जा सके। चाणक्य का व्यावहारिक दृष्टिकोण पारंपरिक सोच को चुनौती देता है तथा लोगों को समाज के मानदंडों एवं मान्यताओं पर प्रश्न उठाने के लिये प्रोत्साहित करता है।

इन विचारों को अपनाने से व्यक्ति सशक्त एवं सकारात्मक मानसिकता प्राप्त कर सकते हैं जिससे वे अपने जीवन में आने वाली चुनौतियों का सामना करने तथा ज्ञान और निश्चयात्मकता के साथ अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में सक्षम बन सकते हैं।

चाणक्य:

- चाणक्य (350-275 ईसा पूर्व) को **कौटिल्य और विष्णुगुप्त के नाम से भी जाना** जाता है। उनका जन्म एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था और उन्होंने अपनी शिक्षा तक्षशिला (अब पाकिस्तान में) में प्राप्त की थी।
- वह **मौर्य साम्राज्य के संस्थापक चंद्रगुप्त मौर्य के शासनकाल में प्रधानमंत्री** थे।
- उन्हें **राजनीतिक ग्रंथ अर्थशास्त्र** और **सूक्तियों के संग्रह 'चाणक्य नीति' के लेखक** के रूप में जाना जाता है जिसे उन्होंने **प्रभावशाली शासन करने के तरीके पर युवा चंद्रगुप्त के लिये एक निर्देश पुस्तिका के रूप में लिखा** था।

अर्थशास्त्र और चाणक्य नीति के विषय में:

- **अर्थशास्त्र:**
  - अर्थशास्त्र को चाणक्य की प्रशिक्षण पुस्तिका माना जाता है जिसके द्वारा उन्होंने **चंद्रगुप्त को एक नागरिक से राजा में बदल दिया था।**
  - अर्थशास्त्र के उपदेशों ने चंद्रगुप्त को न केवल सत्ता पर कब्ज़ा करने में सक्षम बनाया अपितु सत्ता को बनाए रखने में भी सक्षम बनाया। इसके पश्चात् उन्होंने अर्थशास्त्र को **अपने बेटे बिंदुसार और फिर अपने पौत्र अशोक महान को सौंप** दिया था। अशोक की प्रारंभिक सफलता का श्रेय भी अर्थशास्त्र को दिया जा सकता है जब तक कि अशोक का युद्ध से मोहभंग नहीं हो गया तथा बौद्ध धर्म को अपना लिया था।
  - अर्थशास्त्र को **चार्वाक के दार्शनिक विद्यालय में प्रस्तुत** किया गया है जिसने पूरी तरह से **भौतिकवादी विश्वदृष्टि के पक्ष में घटनाओं की अलौकिक व्याख्या को खारिज** कर दिया था।
    - संभवतः अर्थशास्त्र की **व्यावहारिक प्रकृति चार्वाक की नींव के बिना कभी विकसित नहीं हो सकती थी।**
  - **2,000 वर्ष पूर्व लिखे जाने के बावजूद चाणक्य की शिक्षाएँ आधुनिक युग में भी प्रासंगिक हैं** तथा नेतृत्व एवं प्रबंधन से लेकर संघर्ष **समाधान और कूटनीति** तक जीवन के विभिन्न पहलुओं पर लागू की जा सकती हैं।
- **चाणक्य नीति:**
  - इसमें नेतृत्व, शासन, प्रशासन, कूटनीति, युद्ध, अर्थशास्त्र, व्यक्तिगत विकास और सामाजिक आचरण सहित **विषयों की एक विस्तृत शृंखला** शामिल है। यह प्रभावी निर्णय लेने, ईमानदारी बनाए रखने, मानव स्वभाव को समझने, शक्ति बनाने एवं बनाए रखने, वित्त प्रबंधन और अच्छे संबंधों को बढ़ावा देने को लेकर मार्गदर्शन प्रदान करता है।
  - चाणक्य नीति की शिक्षाएँ बुद्धिमत्ता, ज्ञान, रणनीतिक सोच, नैतिक व्यवहार और उत्कृष्टता की खोज के महत्त्व पर बल देती हैं।
  - यह **जीवन, शासन और व्यक्तिगत विकास के विभिन्न पहलुओं पर मार्गदर्शन की आशा रखने वाले व्यक्तियों के लिये एक मूल्यवान संसाधन के रूप में कार्य** करता है।
    - इसके व्यावहारिक ज्ञान एवं प्रासंगिकता के कारण **प्राचीन और आधुनिक दोनों समय में इसका अध्ययन एवं सराहना** की

जाती है।

- चार्वाक ने **वेदों के नाम से विख्यात हिंदू धार्मिक ग्रंथों को पूरी तरह से खारिज** कर दिया था। इसके बारे में रूढ़िवादी मानते थे कि ये **ब्रह्मांड के निर्माता और ब्राह्मण के शब्द** हैं।
- वेदों को स्वीकार करने वाले **धार्मिक और दार्शनिक विद्यालयों को आस्तिक** ("वहाँ मौजूद है") के रूप में जाना जाता था, जबकि **वैदिक दृष्टि को अस्वीकार करने वाले लोगों को नास्तिक** ("वहाँ मौजूद नहीं है") के रूप में जाना जाता था।
- [**जैन**] **और बौद्ध धर्म** दोनों को **नास्तिक विचारधारा** माना जाता है लेकिन चार्वाक जो कि नास्तिक हैं उन्होंने **किसी भी अलौकिक अस्तित्व या अधिकार को नकारने के लिये इस अवधारणा को आगे बढ़ाया** था।

राज्य से संबंधित कौटिल्य का सप्तांग सिद्धांत:

- "सप्तांग" शब्द सात अंगों, घटकों या तत्त्वों को इंगित करता है। इस सिद्धांत के अनुसार, एक राज्य या सुशासित साम्राज्य सात आवश्यक तत्त्वों या अंगों से बना होता है जो इसकी स्थिरता एवं समृद्धि में योगदान करते हैं। इसमें शामिल हैं:
  - **स्वामी (शासक):** राजा या शासक को राज्य में केंद्रीय व्यक्ति माना जाता है। ये महत्त्वपूर्ण निर्णय लेने, कानून और व्यवस्था बनाए रखने, राज्य की रक्षा करने तथा लोगों का कल्याण सुनिश्चित करने के लिये ज़िम्मेदार होते हैं।
  - **अमात्य (मंत्री):** शासन में राजा की सहायता करने में मंत्री या सलाहकार महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन मंत्रियों को न केवल राजा को सलाह देनी होती है बल्कि इन्हें अपने विचार-विमर्श की गोपनीयता को भी बनाए रखना होता है।
  - **जनपद (नागरिक और क्षेत्र):** यह राज्य के क्षेत्र एवं नागरिकों को संदर्भित करता है। राज्य का क्षेत्र उपजाऊ होना चाहिये तथा स्वस्थ पर्यावरण हेतु उसमें जंगल, नदियाँ, पहाड़, खनिज, वन्य जीवन आदि प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होने चाहिये। नागरिकों को अपने राजा के प्रति वफादार, मेहनती, अनुशासित, धार्मिक, अपनी मातृभूमि की रक्षा हेतु लड़ने के लिये तैयार और नियमित आधार पर कर का भुगतान करना चाहिये।
  - **दुर्ग (किलेबंदी):** किलेबंदी और रक्षात्मक संरचनाएँ राज्य की सुरक्षा का प्रतिनिधित्व करती हैं। बाहरी खतरों से बचाव और आंतरिक स्थिरता बनाए रखने के लिये एक सुदृढ़ दुर्ग या गढ़ होना महत्त्वपूर्ण है।
  - **कोष (खजाना):** खजाना राज्य की आर्थिक ताकत का प्रतिनिधित्व करता है। इसमें बुनियादी ढाँचे के विकास, रक्षा एवं कल्याण कार्यक्रमों सहित राज्य की अन्य गतिविधियों का समर्थन करने के लिये वित्तीय संसाधन, राजस्व संग्रह और वित्त का प्रबंधन शामिल है।
  - **दंड (सेना):** राज्य को बाहरी आक्रमण से बचाने और आंतरिक व्यवस्था बनाए रखने के लिये सैन्य या सशस्त्र बल आवश्यक हैं। ये राजा के अधिकार को सुनिश्चित करते हैं तथा राज्य के हितों की रक्षा करते हैं।
  - **मित्र (गठबंधन):** किसी राज्य की सुरक्षा एवं समृद्धि के लिये गठबंधन महत्त्वपूर्ण हैं। राजनयिक संबंध बनाए रखना, रणनीतिक गठबंधन बनाना और व्यापार में संलग्न होना राज्य के विकास और स्थिरता में योगदान देता है।

चाणक्य की कुछ विचारधाराएँ:

- **"भले ही कोई साँप ज़हरीला न हो, फिर भी उसे ज़हरीला होने का दिखावा करना चाहिये।"**
  - यह **शक्ति और प्रतिरोध को प्रदर्शित करने के महत्त्व** को रेखांकित करता है, भले ही किसी के पास अंतर्निहित शक्ति या लाभ न हो। यह विचार बताता है कि **किसी की वास्तविक क्षमताओं की परवाह किये बिना, सामर्थ्य तथा लचीलेपन की छवि विकसित करना फायदेमंद हो सकता** है।
  - यह **आत्मविश्वास प्रदर्शित करने और संभावित विरोधियों या खतरों को दूर करने हेतु** ताकत की छाप बनाने के लिये एक अनुस्मारक के रूप में कार्य करता है।
- **"मनुष्य जन्म से नहीं कर्म से महान होता है।"**
  - **यह इस बात पर ज़ोर देता है कि सच्ची महानता** केवल स्थिति या विशेषाधिकार प्राप्त करने के बजाय किसी के कार्यों, **उपलब्धियों और चरित्र के माध्यम से अर्जित की जाती है।**
  - यह धारणा **व्यक्तियों को उनकी परवरिश या सामाजिक प्रतिष्ठा की परवाह किये बिना उत्कृष्टता के लिये प्रयास करने और समाज में सकारात्मक योगदान देने हेतु प्रोत्साहित** करती है। यह इस विचार को पुष्ट करता है कि व्यक्तिगत योग्यता तथा कार्य किसी की महानता को निर्धारित करने में अंतिम कारक हैं।
- **"एक व्यक्ति को बहुत अधिक ईमानदार नहीं होना चाहिये। सीधे पेड़ हमेशा पहले काटे जाते हैं और ईमानदार लोगों को पहले प्रताड़ित किया जाता है।"**
  - **उक्ति के अनुसार, अत्यधिक ईमानदार होने से व्यक्ति नुकसान के प्रति अधिक संवेदनशील हो सकता है। यह ईमानदार लोगों की तुलना सीधे पेड़ों से करता है, जिन्हें अक्सर सबसे पहले निशाना बनाया जाता है या नुकसान पहुँचाया जाता है।**
  - हालाँकि यह दुर्भाग्यपूर्ण वास्तविकता को स्वीकार करता है कि ईमानदार व्यक्तियों को कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है, यह समझना महत्त्वपूर्ण है कि इसका मतलब यह नहीं है कि बेईमान होना ही समाधान है। इसके बजाय **यह किसी के मूल्यों और अखंडता से समझौता किये बिना, कुछ स्थितियों में सतर्क रहने के लिये एक अनुस्मारक के रूप में कार्य** करता है।
- **"कोई काम शुरू करने से पहले हमेशा अपने आप से तीन प्रश्न पूछें- मैं यह क्यों कर रहा हूँ? इसके परिणाम क्या हो सकते हैं? और क्या मैं सफल होऊंगा? जब गहराई से सोचने पर इन प्रश्नों के संतोषजनक उत्तर मिल जाएँ, तभी आगे बढ़ें।**
  - किसी भी कार्य को करने से पहले चाणक्य स्वयं **से तीन महत्त्वपूर्ण प्रश्न पूछने** की सलाह देते हैं:

    - **मैं यह क्यों कर रहा हूँ?** यह प्रश्न आपको अपने कार्यों के पीछे के उद्देश्य और प्रेरणा पर विचार करने के लिये प्रेरित करता है।
    - **परिणाम क्या हो सकते हैं?** यह प्रश्न आपको अपने कार्यों के संभावित परिणामों पर विचार करने के लिये प्रोत्साहित करता है।
    - **क्या मैं सफल होऊंगा?** यह प्रश्न आपको अपनी क्षमताओं और सफलता की संभावनाओं का आकलन करने की चुनौती देता है।
  - यह **दृष्टिकोण विचारशील निर्णय लेने को बढ़ावा देता** है और सकारात्मक परिणामों की संभावना बढ़ाता है।
- **"एक बार जब आप किसी चीज़ पर काम करना शुरू कर दें, तो असफलता से न डरें और न ही उसे छोड़ें। जो लोग ईमानदारी से काम करते हैं वे अधिक खुश रहते हैं।"**
  - यह किसी के काम में दृढ़ता और समर्पण के महत्त्व पर ज़ोर देता है। चाणक्य के अनुसार, एक बार जब आप कोई कार्य शुरू करते हैं, तो विफलता से डरना या आसानी से हार न मानना महत्त्वपूर्ण होता है।
    - उनका मानना है कि जो लोग लगन और ईमानदारी से काम करते हैं उन्हें ही सबसे अधिक प्रसन्नता होती है।
  - यह उद्धरण **व्यक्तियों को लचीली मानसिकता रखने, चुनौतियों को स्वीकार करने और असफलताओं के बावजूद अपने प्रयासों के प्रति प्रतिबद्ध रहने के लिये प्रोत्साहित** करता है। यह सुझाव देता है कि वास्तविक संतुष्टि ईमानदारी से प्रयास करने एवं अपने लक्ष्यों के प्रति दृढ़ रहने से प्राप्त की जा सकती है।
- **"जैसे ही भय निकट आए, उस पर आक्रमण करके उसे नष्ट कर दो।"**
  - चाणक्य के अनुसार, जब डर लगे तो तुरंत उसका सामना करने और उसे खत्म करने के लिये कदम उठाना चाहिये। यह सुझाव देता है कि **डर के आगे झुकने या उसे आपको स्तब्ध कर देने की बजाय उसका डटकर सामना करना तथा उस पर विजय पाना बेहतर है।**
  - यह उद्धरण व्यक्तियों को अपने डर से निपटने, चुनौतियों का सामना करने में साहस और दृढ़ संकल्प का प्रदर्शन करने हेतु सक्रिय होने के लिये प्रोत्साहित करता है। **त्वरित एवं निर्णायक कार्रवाई करके व्यक्ति डर पर विजय प्राप्त कर सकता** है तथा व्यक्तिगत विकास व सफलता प्राप्त कर सकता है।
- **"दूसरों की गलतियों से सीखें- आप उन सभी गलतियों को स्वयं करने के लिये पर्याप्त समय तक जीवित नहीं रह सकते हैं।**
  - चाणक्य का सुझाव है कि हर गलती खुद करने के लिये लंबे समय तक जीवित रहना असंभव है।
  - ऐसा करने से **हम व्यक्तिगत रूप से नकारात्मक परिणामों का अनुभव किये बिना ज्ञान और अंतर्दृष्टि प्राप्त कर सकते हैं।** यह व्यक्तियों को दूसरों के अनुभवों से मिले सबक के प्रति चौकस तथा ग्रहणशील होने के लिये प्रोत्साहित करता है,**जिससे हम बेहतर विकल्प चुन सकते हैं एवं वही गलतियाँ दोहराने से बच सकते हैं।**

समकालीन समय में चाणक्य की शिक्षाओं की प्रासंगिकता:

- **शिक्षा की स्थायी प्रासंगिकता:** चाणक्य ने अपने मौलिक सिद्धांतों में से एक के रूप में शिक्षा के महत्त्व पर बहुत ज़ोर दिया। उनका दृढ़ विश्वास था कि ज्ञान प्राप्त करना तथा कौशल विकसित करना जीवन में विजय के लिये आवश्यक है और वह अर्थशास्त्र, राजनीति एवं युद्ध सहित विविध क्षेत्रों में **सर्वांगीण शिक्षा प्राप्त करने वाले व्यक्तियों के प्रति अत्यधिक समर्पित** थे।
  - समकालीन समय में भी यह धारणा लागू है क्योंकि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को **व्यक्तिगत और व्यावसायिक विकास के लिये एक महत्त्वपूर्ण उत्प्रेरक के रूप में पहचाना जाता** है, जो अंततः सफलता की ओर ले जाती है।
- **नेतृत्व और संचार में मानव प्रकृति:** चाणक्य की एक महत्त्वपूर्ण सीख जो आज भी प्रासंगिक है, वह है- मानव स्वभाव/प्रकृति के बारे में उनका ज्ञान और लोगों की ताकत तथा कमज़ोरियों का आकलन करने में उनका कौशल। उन्होंने **व्यक्तियों के चरित्र एवं इरादों को पहचानने में सक्षम होने के महत्त्व पर ज़ोर दिया, क्योंकि प्रभावी संचार और नेतृत्व के लिये मानव स्वभाव को समझना आवश्यक** है।
  - **यह अवधारणा आज की दुनिया में भी लागू है, क्योंकि सफल नेता और संचारक अक्सर वे होते हैं जो यह समझ सकते हैं कि लोग ऐसा व्यवहार क्यों करते हैं और उन्हें क्या प्रेरित करता है।**
- **रणनीतिक विचार और कूटनीति:** शिक्षा एवं मानव स्वभाव की अपनी समझ के साथ-साथ रणनीतिक विचार तथा कूटनीति पर चाणक्य की शिक्षाएँ आज की दुनिया में अत्यधिक प्रासंगिक हैं। उन्होंने **शक्ति के निर्माण व संरक्षण के साथ-साथ संघर्षों को सुलझाने और विवादों को लेकर बातचीत करने** के लिये कूटनीति को नियोजित करने पर बहुमूल्य मार्गदर्शन दिया है।
  - इन शिक्षाओं का समकालीन परिदृश्यों में प्रत्यक्ष अनुप्रयोग है, जिसमें **बातचीत और संघर्ष समाधान के साथ-साथ व्यापार तथा राजनीति के क्षेत्र में शक्ति की गतिशीलता** भी शामिल है।
- **नेतृत्व और शासन में नैतिकता और सदाचार:** चाणक्य की शिक्षाओं में एक स्पष्ट और महत्त्वपूर्ण सिद्धांत नेतृत्व तथा शासन में नैतिकता एवं नैतिकता के महत्त्व का है। उनके अनुसार, एक नेता को लोगों का समर्थन व विश्वास बनाए रखने के लिये नैतिकता और नैतिक मूल्यों को कायम रखना चाहिये।
  - वर्तमान युग में **यह सिद्धांत सरकार और कॉर्पोरेट संदर्भों के नेतृत्व में लागू होता है** , जहाँ नैतिक तथा ज़िम्मेदार नेतृत्व हितधारकों के साथ विश्वास एवं विश्वसनीयता स्थापित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- **वित्तीय स्थिरता और धन प्रबंधन की भूमिका:** इसके अतिरिक्त उन्होंने वित्तीय स्थिरता तथा विवेकपूर्ण धन प्रबंधन के महत्त्व पर ज़ोर दिया है। उनके अनुसार, राज्य की स्थिरता सुनिश्चित करने के लिये एक शासक के पास मज़बूत वित्तीय स्थिति होनी चाहिये।
  - यह सिद्धांत **व्यक्तिगत वित्त और धन प्रबंधन** तक फैला हुआ है, क्योंकि व्यक्तिगत स्थिरता तथा सुरक्षा के लिये एक मज़बूत वित्तीय नींव स्थापित करना महत्त्वपूर्ण है।
- **प्रभावी नेतृत्व और सामाजिक कल्याण:** सुशासन और आर्थिक प्रगति तथा सामाजिक न्याय के बीच संतुलन बनाने के बारे में उनकी अवधारणाएँ वर्तमान युग में भी प्रासंगिक बनी हुई हैं। उन्होंने लोगों के कल्याण को सुनिश्चित करने के महत्त्व को पहचाना एवं **सामाजिक समानता के साथ आर्थिक विकास को सुसंगत बनाने के उनके विचारों को आज की दुनिया में लागू किया जा** रहा है।
  - इन सिद्धांतों को शामिल करके शासन और प्रशासन को बढ़ाया जा सकता है, यह गारंटी देते हुए कि लोगों की आवश्यकताओं तथा भलाई पर उचित विचार किया जाता है।

UPSC सिविल सेवा परीक्षा, विगत वर्ष के प्रश्न

प्रश्न. "भ्रष्टाचार सरकारी राजकोष का दुरुपयोग, प्रशासनिक अदक्षता एवं राष्ट्रीय विकास के मार्ग में बाधा उत्पन्न करता है।" कौटिल्य के विचारों की विविचना कीजिये। (2016)

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/chanakya-s-ideologies